ISSN : 0974-3065

द्वितीय अंक

इतिहास दर्पण
ITIHAS DARPAN

विक्रमाब्ध २०७९, युगांब्ध ५१२४
जानेवारी २०२२

अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना की शोध पत्रिका
आपटे भवन, केशव कुंज, झंडेवाला, नई दिल्ली - ११० ०५५
RESEARCH JOURNAL OF AKHIL BHARTIYA ITIHAS SANKALAN YOJANA
Apte Bhawan, Keshav Kunj, Jhandewala, New Delhi - 110 055

Assistant Professor
Lokmanya Mahavidyalaya, Wa
Dist. Chandrapur

Scanned with OKEN Scanner

अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना

इतिहास दर्पण

(यू.जी.सी. मानदण्ड)

अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना भारतीय इतिहास और संस्कृति के क्षेत्र में कार्यरत राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय विद्वतजनों का एक राष्ट्रव्यापी संगठन है जो भारतीय इतिहास, संस्कृति और परम्परा आदि के क्षेत्र में प्रमाणिक, तथ्यपरक तथा सर्वमान्य इतिहास लेखन तथा प्रकाशन की दिशा में कार्यरत है। भारतीय इतिहास में हो रहे नए-नए अनुसंधान और बदलते आयामों को समझने- समझाने हेतु योजना निरंतर संगोष्ठियों, परिचर्चाओं एवं विशेष व्याख्यानों का आयोजन देश के विभिन्न क्षेत्रों में करती रहती है। योजना इतिहास में हो रहे नए-नए अनुसंधानों और शिक्षा के जगत में उभर रहे नये-नये आयामों को प्रकाशित करने हेतु एक अर्धवार्षिक पत्रिका का प्रकाशन "इतिहास दर्पण" के नाम से करती है। इतिहास दर्पण देश - विदेश के प्रतिष्ठित संस्थानों और व्यक्तियों द्वारा सब्सक्राइब की जाती है। इतिहास दर्पण के प्रत्येक अंक ISSN 0974–3065 नंबर से प्रकाशित किया जाता है।

पत्रिका का नाम : इतिहास दर्पण

ISSN नंबर : इतिहास दर्पण का प्रत्येक अंक ISSN के साथ प्रकाशित किया जाता है।

प्रकाशन का स्वरुप : इतिहास दर्पण अर्द्धवार्षिक पत्रिका है जो वर्ष में दो बार नियमित रूप से प्रकाशित की जाती है। इसमें देश-विदेश के विभिन्न विद्वानों व शोधकर्ताओं से शोध पत्र आमंत्रित कर प्रकाशन से पूर्व उनका विधिवत समीक्षा (पीअर रिव्यु) कराया जाता है। यह पत्रिका मूलतः *हार्ड फॉर्म* तथा बाद में पी. डी. एफ. की जाती है।

काल-चक्र : यह वर्ष में दो बार प्रकाशित की जाती है ।

प्रकाशक, शहर और राष्ट्र: इतिहास दर्पण, अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना द्वारा प्रकाशित की जाती है । इसका मुख्यालय नई दिल्ली, भारत में स्थापित है।

मानदंड/क्राइटेरिया : इतिहास दर्पण के लिए इतिहास संकलन योजना की वेबसाइट http://www.abisy.org/ के अंतर्गत एक पृथक वेब लिंक है जहां इतिहास दर्पण से सम्बंधित सभी जानकारी उपलब्ध है।

...ya Manavidya...
Dist. Chandrapur

Scanned with OKEN Scanner

 ISSN: 0974-3065

अनुक्रमणिका

अ. क्र.	शोधनिबंधांचे नाव	लेखकाचे नाव	पृष्ठ क्रमांक
१	यशवंतराव होळकर यांची लष्करी व्यवस्था	महेशकुमार भगवानराव चौरे	१-८
२	जनाबाई माधवराव रोकडे कार्य आणि कर्तृत्व	डॉ. सपकाळ रामेश्वर विक्रम	९-१४
३	बंगालचा नवाब सिराजउद्दौला आणि ब्रिटीश	डॉ. सचिन उत्तमराव हंचाटे सहयोगी	१५-२८
४	महाराष्ट्रातील स्त्रियांचे नेतृत्व आणि स्त्रीवादी चळवळीचे योगदान	डॉ. पी. बी. सिरसट	२९-३३
५	भारतीय स्वातंत्र्यलढ्यातील महाराष्ट्रातील वृत्तपत्रांचे योगदान	श्री. दराडे नवनाथ एकनाथ डॉ. सविता गंगाधरराव मुंढे	३४-४०
६	महानुभाव संप्रदायाच्या भाषिक व सामाजिक परिवर्तनाचा अभ्यास	सतिष उत्तमराव रिंढे	४१-४५
७	भारतीय स्वातंत्र्यलढ्यात महिलांचे योगदान विशेष संदर्भ : बीड जिल्हा	प्रा. डॉ. प्रशांत साबळे	४६-५४
८	मुंबईतील ब्रिटिश कालीन कामगार क्षेत्रातील स्त्रियांची स्थिती	प्रा. दिलीप भिमराव गिन्हे	५५-६०
९	भक्ती चळवळीची सामाजिक फलश्रुति	डॉ. नवनाथ ज्ञानोबा पवळे	६१-६४
१०	भारतीयांचे इंग्रजांविरुद्ध सशस्त्र लढे एक : ऐतिहासिक अध्ययन	प्रा. डॉ. नाईक एन. डी.	६५-६९
११	रायगड जिल्यातील आद्यक्रांतिकारक वासुदेव बळवंत फडके यांचे कार्य	प्रा. डॉ. पाथरकर एस. व्ही.	७०-७५
१२	स्वातंत्र्यपूर्व काळातील शेतकरी चळवळ : विशेष संदर्भ पारनेर तालुका	गवारी विश्वास रोहिदास डॉ. उत्तम अप्पासाहेब पठारे	७६-८३
१३	1857 चा स्वातंत्र्य समर आणि मराठवाडा	प्रा. डॉ. शिंदे अनंत नामदेवराव	८४-८८
१४	क्रांतिगुरु लहुजी साळवे यांचे भारतीय स्वातंत्र्य आंदोलनातील योगदान	प्रा. डॉ. ताडेराव राज भुजंगराव	८९-९७
१५	राष्ट्रीय आंदोलनातील महाराष्ट्राचा सहभाग	प्रा. डॉ. सखाराम मारुती वांढरे	९८-१०५
१६	लोकशाहिर अण्णा भाऊ साठे आणि	डॉ. बादलशाहा डोमाजी चव्हाण	१०६-११३

Assistant Professor
...kmanya Mahavidyalaya ...

Scanned with OKEN Scanner

३३	चांदा जिल्हे के वरोरा क्षेत्र का आर्थिक विकास (१८७० ते 2000)	प्रा. डॉ. दीपक पां. लोणकर	२१६-२२२
३४	CRYPTOCURRENCY MARKET IN INDIA	Dr. Mangesh Shirsath	२२३-२२७
३५	THE ROLE OF GOVERNMENT FOR WOMEN'S IMPROVEMENT FROM INDIAN INDEPENDENCE TO GLOBALISATION	Dr. Sambhaji Sopanrao Darade	२२८-२३१
३६	Mesolithic Culture And Ostrich Eggs Shells: A Case Study of Gaudgaon Village, Tehsil-Akkalkot, District- Solapur, Maharashtra	Dr. Kshirsagar Shivaji Dadaso	२३२-
३७	An Overview on Presentation of History in Film and Literature	Dr. G. V. Gatti	२३३-२३६
३८	Freedom Fighter Eknathrao Jadhav: A Versatile Personality	Mr. Mahesh S. Jadhav	२३७-२३९
३९	An Overview on Historical Background of Aurangabad	Dr. Radhkrushna Joshi	२४०-२४३
४०	Contribution of Krantiveer Nagnath Anna Nayakvadi in the Struggle for Freedom.	Dr. Santosh Tukaram Kadam	२४४-२४९
४१	An Overview on Temple Architecture in India	Labade Manisha Eknath	२५०-२५२
४२	Relevance of Economic Thoughts of Rao Bahadur Mahadev Govind Ranade	Dr. Khiste Onkar Balkrishna	२५३-२६१
४३	Thoughts on the Indigenous Movement in Maharashtra	Prof. Dhanajay Jawalekar,	२६२-२६७
४४	The First Student Movement In Marathwada - Vande Mataram Movement	Dr. Ravi Subhashrao Satbhai	२६८-२७४

Assistant Profe
Lokmanya Mahavidyal
Dist. Chandra

Scanned with OKEN Scanner

 ISSN: 0974-3065

'चांदा जिल्हे के वरोरा क्षेत्र का आर्थिक इतिहास'

(१८७० ते २०००)

प्रा.डॉ. दीपक पां. लोणकर
लोकमान्य महाविद्यालय, वरोरा
जि. चंद्रपूर (महा.), पिन. ४४२९०७
मो. नं. ९६५७३३६९९४
deepakmd.lonkar@gmail.com

प्रस्तावना—

इतिहास के प्रमुखत:हा तीन काल माने जाते है. प्राचीन, मध्यकाल और आधुनिक काल, इतिहास की व्यापकता बढकर नये प्रवाह और सिध्दात का आधुनिक काल मे उद्‌य हुआ है. कुछ समय पहले इतिहास का लेखन राजनितीक दृष्टी से किया जाता था. लेकीन आज राजनितीक इतिहास के साथ ही आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, प्रशासकीय इतिहास का भी लेखन इतिहास मे सम्मीलीत किया गया है. इस के अलावा आधुनिक इतिहास मे अनेक शाखाए उत्पन्न हुई है. उदा. सरंचनावादी इतिहास, पौर्वात्यवादी इतिहास, स्थानिय इतिहास, (सबाल्टर्न) वंचितो का इतिहास, क्षेत्रीय इतिहास, साम्यवादी इतिहास आदि इस दृष्टीसे स्थानिय इतिहास का महत्व बढकर बडी पैमाने पर इतिहास लेखन किया जा रहा है. क्योंकी स्थानिय इतिहास के अलावा देश का इतिहास पूर्वताहा नही माना जाता. इस दृष्टीसे चंद्रपूर जिले के वरोरा का आर्थिक इतिहास का अध्ययन करना महत्वपूर्ण है.

क्षेत्रिय इतिहास और स्थानिय इतिहास के माध्यम से इस क्षेत्र का आदोलन, विद्रोह युध्द, व्यक्ति, स्वातंत्र्यसेनानी आदि का महत्व जानकर इतिहास कारोने क्षेत्रीय और स्थानिक इतिहास की संकल्पना इतिहास ने लाई. ऐतिहासीक दृष्टीसे स्थानिय इतिहास का अध्ययन बहुत महत्वपूर्ण होता जा रहा है. स्थानीय एव क्षेत्रीय इतिहास मे जीन व्यक्तियोने समय समय पर महत्वपूर्ण योगदान एक बलिदान किया है. वही आज इतिहास मे गुमनाम है क्योकी उनके कार्योपर अभी तक प्रकाश नही डाला है. जब तक हम स्थानिय इतिहास के तथ्यो को उजागर करेंगे तभी उन लोगो को राष्ट्रीय इतिहास के पन्नो मे जोड पाएंगे. इस दृष्टीसे स्थानीय इतिहास का महत्व बढ रहा है. और स्थानिय क्षेत्र के राजकीय, आर्थिक, सांस्कृतीक, प्रशासकीय, सामाजीक अध्ययन शुरू हुआ है.

उद्देश (Objective) —

१) वरोरा के आर्थिक क्षेत्र का अध्ययन कर वहा चल रहे आर्थिक संसाधनो का अध्ययन करना.

२) वरोरा मे अंग्रेजो के काल मे हूए व्यापार क्षेत्र का अध्ययन करना.

Scanned with OKEN Scanner

३) वरोरा मे स्वातत्र्योत्तर काल मे आए व्यापार, उद्योग का परीवर्तन अध्ययन करना.

गृहीतके **(Hypothesis)** –

१) वरोरा के आर्थिक क्षेत्र का योगदान राष्ट्रीय व्यापार मे है.

२) वरोरा के आर्थिक क्षेत्र का दोहन अंग्रेजोने किया.

३) वरोरा क्षेत्र आर्थिक संसाधनो के माध्यम से आधुनिकता की ओर बढा है.

संशोधन पध्दती—

इस क्षेत्र मे ऐतिहासिक लेखन पध्दती के माध्यम से अध्ययन कर वर्णनात्मक लेखन पध्दतीका उपयोग किया जाएगा और सर्व्हेक्षण (Survey Method) का अध्ययन कर वरोरा क्षेत्र के आर्थिक इतिहास की जानकारी प्राप्त कर मुलाखत (Interview Method) का उपयोग कर वरोरा के बाजार व्यवस्था, व्यापार व्यवस्था की जानकारी प्राप्त की जाएगी.

प्राचीन और मध्ययुगीन काल मे वरोरा :—

वरोरा का क्षेत्र विदर्भ राज्य के आता है. प्राचीन काल मे विदर्भ राज्य का उल्लेख मिलता है. रामायण और महाभारत काल, १६ महाजनपद मे भी अस्सक जनपद जो विदर्भ राज्य के अंतर्गत था[१]. कौटील्य का अर्थशास्त्र मे विदर्भ का संदर्भ मिलता है. सम्राट अशोक के शिलालेख इस क्षेत्र मे थे[२] इसके अलावा शुंग, सातवाहन, नल, वाकाटक, मुंड, राष्ट्रकुट, परमार, चालुक्य, नागा, माना, यादव वंश का शासन प्राचीन काल मे विदर्भ पर था इसका उल्लेख मिलता है.[३]

मध्यकाल मे भी खिलजीने यादवो को हरा कर विदर्भ पर शासन स्थापीत कर मुस्लीम वंश की सत्ता शुरू की. उसके बाद तुघलक बहमनी, आदिलशाही, निजामशाही, मोगल इन सब का अधिराज्य विदर्भ पर था और यहा से इन शासके ने बडी मात्रा मे आर्थिक दोहन किया. मराठा और पेशवा का भी कुछ समय तक विदर्भपर अधिकार था.

आधुनिक काल मे गोंड शसको की सत्ता विदर्भ पर भी और यहा चांदा, बल्लारश्हा, शिरपूर इन जगह उनकी राजधानी थी.[४] गोंड शासकोने ३०० साल तक इस क्षेत्र पर राज किया. गोड शासको बाद नागपूर के भोसला वंश ने विदर्भ पर राज किया. गोंड और भोसला काल मे वरोरा का ऐतिहासिक महत्व था.[५] और वह महत्वपूर्ण था. लेकीन ब्रिटीश काल मे वरोरा का महत्व बढ गया. यहा प्रशासन का केंद्र तयार किया. वरोरा क्षेत्र जहालवादी ओका गढ माना जाता था.[६]

ब्रिटीशकाल मे वरोरा :—

ब्रिटीश काल मे वरोरा का क्षेत्र वऱ्हाड और मध्यप्रांत (CP & Berar Provinces) के अंतर्गत चांदा जिले मे था और वह प्रशासकीय केंद्र था. १९०३ मे चांदा जिले मे चांदा, वरोरा, ब्रम्हपूरी, गडचिरोली, सिरोंचा यह पाच तससिल थे.[७] और वरोरा तहसिल मे चिमुर, भद्रावती यह क्षेत्र सम्मीलीत था. १९०१ की गनगणना के अनुसार यहा की लोकसंख्या १०६२६ इतनी थी.[८] और वरोरा यह केंद्र नागपूर—वर्धा रेल्वेलाईन से जुडा हुआ था. जीस कारण वरोरा मे अनेक तत्कालीन राष्ट्रीय नेता म. गांधी,

लोकमान्य टिळक, म. गांधी, राजेंद्र प्रसाद, दादासाहेब खापर्डे जैसे नेता ने यहापर राष्ट्रीय आंदोलन मे शामील होकर जनता को संबोधीत कर जागृती तयार करने का कार्य किया था.[९]और उसका परीणाम यह हुआ की यहा राष्ट्रीय आंदोलन तेजी से फैलता गया और जंगल सत्याग्रह, वैयक्तिक सत्याग्रह, १९४२ का भारत छोडो आंदोलन मे वरोरा की जनता सहयोग दिया और वे शामील हुए वरोरा क्षेत्र को चिमूर गाव मे १९४२ की कांती हुई.[१०] जो देशमे प्रसिध्द है इस दृष्टी से वरोरा क्षेत्र मे ब्रिटीश काल मे प्रशासकीय केंद्र तयार कर १९६७ मे यहा Muncipal Corporation की भी स्थापना कि गई.[११]

वरोरा का आर्थिक इतिहास/स्त्रोत

वरोरा क्षेत्र अग्रेज शासन काल मे आर्थिक दृष्टी से महत्वपूर्ण था. चांदा जीले मे वरोरा क्षेत्र एक महत्वपूर्ण अंग माना जाता था. वरोरा क्षेत्र मे उस समय कोयला, कपास, रेल्वे, तेल, व्यापार, जीनींग, टिंबर जैसे उद्योग स्थापीत थे, जीस कारण वरोरा क्षेत्र का नाम विदर्भ महाराष्ट्र मे प्रसिध्द था.

१) कोयला खदान—

१८७० मे ही वरोरा मे कोयला मिलने के प्रमाण मिले.[१२] जीस कारण अंग्रेजोने यहा से कोयला खदान बनायी. यहा उच्च कोटी का कोयला निकाला जाता था. जीसे अग्रेज भारत के अन्य स्थानपर भेजते थे. १८७१ से १९०६ तक वरोरा मे ३५ साल कोयला खदान थी.[१३] यहा का कोयला देश के अन्य स्थानो पर भेज ने के लिए १८७१ मे ही वर्धा से वरोरा के लिए रेल्वे लाईन का काम शुरू किया गया[१४] और कुछ सालो बाद वरोरा के कोयला खदान से कोयले का दोहन अग्रेजो ने अन्य स्थान पर किया इन ३५ सालो मे ३ मिलियन टन कोयला वरोरा खदान से निकाला गया.[१५] इस कोयले के माध्यम से इस क्षेत्र मे इटे बनाने का व्यापार भी होता क्योंकी इन इटोमे कोयले की राख का उपयोग किया जाता था. लेकीन १९०६ मे एक दुर्घटना के कारण कोयला खदान मे तालाब का पाणी भरने के कारण खदान बंद की गई और यहा की यांत्रीक सामुग्री बल्लारशा भेजी गई जहा कोयले के नए भंडार का शोध लगा था.[१६]

२) रेल्वे

वरोरा ते बडी मात्रा मे कोयला मिलने के कारण यहा अग्रेजोने कोयला बाहर स्थानो पर भेजने के लिए वर्धा से वरोरा तक रेल्वे लाईन बिधाई गयी. इसका काम १८७३ मे शुरू किया गया और Great Indian Peninsula Railway Company को यह काम सौपा गया था.[१७] और १८७७ यह काम पुरा हुआ. नागरी और वरोरा यह स्टेशन वरोरा क्षेत्र मे थे और वरोरा स्टेशन एक रेल्वे टर्मीनस (Terminus) था जहा से रेल्वे लाईन पर नियत्रण भी रखा जाता था.[१८]लेकीन १९०६ मे कोयला खदान की दुर्घटना के बाद यह यह टर्मीनस बल्लारशा को भेजा गया. और वरोरा से चंद्रपूर बल्लारशा यह नई लाईन बीछाई गई और वरोरा का महत्व कम हुआ १९०४ से १९०८ तर वरोरा बल्लारशा यह ६३ किमी. की रेल्वेलाईन बिछाई गई जसे उस वक्त ३९ लाख रूपये का खर्चा हुआ. बाद मे बल्लारशा से मद्रास लाईन जोडी गई.[१९]

Scanned with OKEN Scanner

३) कपास —

वरोरा क्षेत्र कपास उत्पादन का भी क्षेत्र था वरोरा के पास वऱ्हाड क्षेत्र मे उच्च कोटी की कपास की पैदावार होती थी. जीस कारण वरोरा मे ६ कपास की जीनीग और प्रोसींग फॅक्टरीया था.[२०] इन कारखानो मे कपास की गाठे तयार कि जाती थी और उसे देश के कोने स्थापीत हुए कपडा मीलोमे भेजी जाती थी. वरोरा के पास ही सी. पी. अँन्ड बेरार प्रांत का वणी जिला था.[२१] जहा कपास का बडी मात्रा मे उत्पादन लिया जाता था, इसके अलावा वर्धा जिलामे हिंगणघाट तहसील भी कपास का क्षेत्र था. जहा कपास की बडी मार्केट थी.[२२] लेकीन वरोरा मे रेल्वे लाईन बिछाने के कारण यहा भी कपास का नया मार्केट शुरू हुआ १९६० मे वरोरा ते वरोरा कपास मार्केट कमिटी की स्थापना की गई और वरोरा के पास एकार्जुना मे कपास संशोधन केंद्र की भी[२३] स्थापना हुई. कहा जाता हैकी १८६० के अमेरिका यादवी युध्द के बाद अमेरीका का क्षेत्र अंग्रेजो के हाथ से निकल गया. उसका परीणाम यह हुआ की अंग्रेजो ने भारत मे विदर्भ प्रांत के चांदामे कपास की जादा पैदावार के लिए प्रयास किया. जीस कारण वरोरा मे कपास का क्षेत्र बढ गया.[२४] १८९४ मे वरोरा सेंटर से कपास के उत्पादन मे ४४ Mounds (३ गाठे) उत्पादन होता था लेकीता १९०६ मे १,०९,००० Mounds (७७८६ गाठे) उत्पादन लिया जाने लगा. यहा की कपास गाठे नागपूर और मुंबई भेजी जाती थी.[२५]

तेल(Oil) उद्योग—

वरोरा के क्षेत्र के अनाज का बडी मात्रामे उत्पादन होता था. विशेषता तिल्हन, अलसी की फसले अत्याधिक मात्रा मे होती थी जीस कारण या तेल उद्योग बडी मात्रा मे स्थापीत किए गए. १९०६ मे तील का क्षेत्र कुल क्षेत्रसे ७.१% और अल्सी(Linseed)का क्षेत्र १९% था.[२६]

The Statistics of cropping at Settlement and during the year 1904-1906[27]

Year	Rice	Jauri	Gram	Wheat	Linseed	Til	Total ropped area
At settlement	30,403	53.357	5142	33,526	32,617	30,617	258.071
1904-05	20,314	91.006	6052	38,447	28,192	28,192	305.172
1905-06	15,877	78.298	6035	48,431	21,450	21,450	312.323
1906-07	19,971	72.807	6172	52.476	20,762	20,762	31.4965

एकार्जुना ग्राम मे Seed and Seedling Growing सेंटर की स्थापना भी गई. जिस कारण तेल के उत्पादन क्षेत्र को बढावा मिले. तील का तेल बडी मात्रा मे दिल्ली भेजा जाता था. १९६५ मे तील का भाव १६५ रूपये प्रति क्विटल था और तील तेल का भाव ३०० रूपया पर क्विटल था. अलसी (Linseed) का भाव १२२ रूपया पर क्विटल था.[२८]

वरोरा मे तेल की कुछ मीले थी जिसमे बशीर आईल मील का नाम शीर्ष मे आता है. उस की स्थापना १९४५ मे की गई. और २२० दिन काम होता था. यहा सीसम (Sesamum) अलसी, कपासबीज और शेंगदाना (Graundnul) का तेल निकाला

Scanned with OKEN Scanner

जाता था.[२९] चंद्रपूर, वरोरा, वणी, पांढरकवडा, यवतमाल, अदिलाबाद से कच्चा माल लाया जाता था और यहा का तील का और अलसी का तेल चंद्रपूर, नागपूर, कलकत्ता, दिल्ली रेल्वे की वैगन मे भरकर भेजा जाता था[३०]

उसके अलावा गाव मे तेल घाणी मे भी तेल निकालकर उसका उपयोग लोक करते थे.

अनाज का व्यापार –

चांदा जिले वरोरा क्षेत्र व्यापार का बडा केंद्र था. यहा तेल, कपास के अलावा खेती के अनेक संसाधनोका व्यापार होता था. वरोरा मे तिल्हन और अलसी जवार, गेहू, चावल (Paddy) जैसे अनाज का व्यापार बडी मात्रा मे था. वरोरा केंद्र अनाज की बडी मंडी थी. वरोरा क्षेत्र मे चावल (Paddy) का बडी मात्रा मे उत्पादन लिया जाता था. चावल उत्पादन के लिए जपानी पध्दती से बीज बोया जाता था.[३१] बीज निर्माण के लिए 'धान विकास योजना' ते तहत कार्य चलता था. वरोरा क्षेत्र मे जवार का भी उत्पादन बडी मात्रा मे लिया जाता था.[३२] १९६५ मे पूरे चंद्रपूर जिले मे ७०,००० क्विटल की जवार का उत्पादन हुआ जिसमे वरोरा क्षेत्र का योगदान जादा था.[३३] और इस क्षेत्र की जवार गुजरात, मध्यप्रदेश, बॉम्बे और विदर्भ के कई इलाके मे निर्यात की जाती थी.[३४]

अनाज के क्षेत्र के अलावा वरोरा मे अनेक प्रकारके उद्योग एव कारखाने थे और बडी मात्रा मे व्यापार होता था. वरोरा क्षेत्र मे बडी मात्रामे जंगल होने कारण यहा लकडी (Timber) का व्यापार बडी मात्रा मे था. और जंगल के ठेकेदार यह व्यापार करते थे. आरा मशीन ने लकडी कटाई और मकानो के लिए दरवाजे खिडकीया, जैसे उपयोगी वस्तू के लिए कटाई की जाती थी और उसका व्यापार तेजी मे था. वरोरा क्षेत्र मे कई लकडी कटाई (wood cutting) की कारखाने थी.[३५] और यहा की लकडी गुजरात, मद्रास, मैसूर, आन्ध्र प्रदेश, मुंबई जैसे बडे शहरोमे भेजी जाती थी. १९६५ के समय चांदा जिले १०० जंगल ठेकेदार थे ओर इस उद्योग साल का बजेट २ से ३ करोड तक था.[३६] इसके अलावा जंगल क्षेत्र मे बांबू का भी व्यापार किया जाता था.

वरोरा बाजार व्यवस्था –

चंद्रपूर जिल्हे के सभी तहसील मे कपडा व्यापार भी तेजी मे था. वरोरा मे भी कपडा व्यापार का क्षेत्र था. नागपूर, मुंबई, मालेगाव उचलकरंजी, बेहरमपूर, सुरत इसे स्थानोसे कपडा खरेदी किया जाता था.[३७]

चंद्रपूर जिले मे वरोरा व्यापार उद्योग का विपरण केंद्र था. रेलगाडी से आया हुआ माल वरोरा के गोदामो मे उतारा जाता था. फिर यहा से जिले के अन्य स्थानोपर भेजा जाता था. १९६८ ने वरोरा के व्यापार का Turnover (बजेट) ५० लाख रू था.[३८] वरोरा मे मुंबई, नागपूर, अकोला, चंद्रपूर से ट्रकोमे माल भरके लाया जाता था. उस समय मुंबई से वरोरा के लिए यातायात दरे निश्चित थी. १० से ११ रूपये पर क्विटल ट्रक का भाडा लिया जात था, नागपूर से सव्वा रूपया क्विटल भाडा लिया जाता था.[३९] इस माल को रखने के लिए एक सरकारी गोडाऊन और एक महाराष्ट्र

सरकार का वेअर हाऊस (Werehouse) था और २० पैसे प्रती क्विटल से गोडाऊन का भाडा लिया जाता था. व्यापारी ओकेभी आठ गोडाऊन थे.[४०]

बैक क्षेत्र :–

वरोरा मे Warada Central co-operative Bank की स्थापना १९१२ मे की गई थी. जो यहा की जनता, व्यवसायीक ओर किसानो के लिए आर्थिक व्यवहार के लिए[४१] इस बॅंक की स्थापणा हुई इस के कुछ दिन बाद ही ब्रम्हपुरी क्षेत्र मे भी बॅंक स्थापीत हुई. और इन्ही दो बॅंको का एकत्रीकरण कर १९६३ मे Chandrapur Co-operative Bank की स्थापीत की गई.[४२] इस बॅंक की शाखाए चंद्रपूर जिले के सभी क्षेत्रो मे स्थापीत की गई. आज यह बॅंक किसनो की बॅंक के नाम से पुरे चंद्रपूर गडचिरोली जीले मे मशहूर है.

खनिज संपदा–

इसके अलावा वरोरा मे खनिज संपत्ती का भी बडी मात्रा मे भंडार है. यहा चुने का पत्थर बडी मात्रा मे पाया जाता है. वरोरा के पास निलजई, करमगव्हान, मार्डा इस वर्धा नदी के क्षेत्र मे चुने का भांडार मिलता है.[४३]

इसके अलावा Fire Clay (जलाऊ मिट्टी) भी बडी मात्रा मे पाई जाती है. जीसका उपयोग आधुनिक काल मे लोहे की भट्टी मे किया जाता था. मकान बनवाने का पत्थर (Bulding Stone) बडी मात्रा मे पाया जाता है. और वरोरा क्षेत्र मे उसकी खदाने भी है.[४४]

आधुनिक काल मे वरोरा का आर्थिक विकास

स्वतंत्रता के बाद वरोरा क्षेत्र आर्थिक संसाधनोका बडी मात्रा मे विकास हुआ. वरोरा के पास समाजसेवा बाबा आमटे ने १९५१ मे आनंदवन की स्थापना की इस कुष्टरोगीयोकी वसाहत मे बाबा आमटेजी ने कुष्टरोगीयोको आत्मनिर्भर बनाने के लिए नये कारखाने उद्योग, स्थापीत कर उनको रोजगार उपलब्ध कराया.[४५]

आनंदवन के बाजू मे ही येन्सा गाव मे Voltas Refregetor Plant की स्थापना १९८४ की गई और वरोरा क्षेत्र के युवको को रोजगार की व्यवस्था की गई. इसके अलावा १९८० मे रेल की पटरीयोमे बिछाने वाले सिमेंट के स्लीपर प्लॉट का भी निर्माण वरोरा मे होता था.[४६] वरोरा क्षेत्र मे ही भद्रावती मे १९६९ मे Defence Factory का निर्माण किया गया.[४७] और इस क्षेत्र के लोगो को रोजगार बडी मात्रा मे उपलब्ध हुआ.

इ. स. २००० के बाद वरोरा क्षेत्र मे MIDC महाराष्ट्र इंडस्ट्रीयल डेवलपमेंट कार्पोरेशन की स्थापना कर यहा अनेक कंपनी का आगमन हुआ जीसमे Wardha Power Plant और GMR इस कंपनी स्थापीत होने के कारण वरोरा क्षेत्र की जनता को बडी मात्रा मे रोजगार मिला है. और वरोरा का आर्थिक क्षेत्र प्रगती की और अग्रेसर हुआ है.

मुल्यांकन –

वरोरा क्षेत्र भले ही भारत के इतिहास मे लिखित रूपमे नही है लेकीन वास्तविक रूप मे इन क्षेत्र की जनता राष्ट्रीय आंदोलन के साथ घनिष्ट संबंध रहा है.

यहा राष्ट्रीय आंदोलन के जहालवादी गुट का प्रमुख केंद्र था. जीस कारण राष्ट्र के प्रमुख नेता ने समय समय पर यहा आकर जनता को अपने भाषणोसे प्रेरीत किया.

अंग्रजो ने इस क्षेत्र से भारी मात्रा मे आर्थिक दोहन किया. यहा का कोयला, कपास, तेल, देशविदेश मे भेजा गया. वरोरा क्षेत्र मे कोयला खाण का शोध लगने के कारण ही इस क्षेत्र मे रेललाईन बिछाई गयी. यहा के क्षेत्र मे बडी मात्रा मे ती, अलसी, जवार जैसे अनाज उत्पादन के कारण ही यहा आर्थिक क्षेत्र को बढावा मीला और नये कारखाने भी स्थापीत हुई जीस कारण इस क्षेत्र मे रोजगार की उपलब्धता हुई और विविध संस्कृतीका भी यहा रोजगार के माध्यम से उद्‌य हुआ और आधुनिकताकी और वरोरा का प्रवास शुरू हुआ. यहा की आर्थिक संपदा के कारण वरोरा के क्षेत्र मे कोयला खाने शुरू होने के कारण प्रदुषण का प्रमाण बढ गया है. यातायात समस्या निर्माण होकर पाणी समस्या का भी उद्‌भव हुआ है. लोकसंख्या भी बढ गई जीसे अनेक समस्या का सामना करना पड रहा है. खेती का क्षेत्र भी कम होकर बेरोजगारी बढ रही है. लोगो का जीवन स्तर मे बदल आ गया है.

संदर्भग्रंथ

१) Grant Charles(Ed), 'The Gazzeteer of the central provinces of India', Education society press, Bombay 1870.

२) Mr. LF Begbie and Mr. A. E. Nelson(Ed), 'Central Provinces District Gazzeteer Chanda', First Edition, Pioneer Press, Alahabad, 1909.

३) Mr. L.F. Bebie and Mr. A.E. Nelson(ed), central prvinees District Gazzeteer chanda, second Edition. 1973.

४) Smith Major 'Lacie', 'Report on me Land Reve Settemect of the chanda Distric,' Central Provinces, 1869.

५) कनिटकर मा. ज.(संपा), 'नागपूर प्रांताचा इतिहास (1885 to 1935)', देशसेवक प्रेस, नागपूर.

६) अप्रकाशित स्मरणिका, 'आमचे गाव – कालचे आजचे उद्याचे, मुद्रण निकेतन प्रकाशन, आनंदवन.

७) बोरकर र. रा., 'चंद्रपूर गडचिरोली जिल्ह्याचे पुरातत्वे', सुयश प्रकाशन नागपुर, २००५.

८) कोलारकर श. गो., 'आधुनिक विदर्भाचा इतिहास', मंगेश प्रकाशन, नागपूर २००३.

९) राजुरकर अ. रा., 'चंद्रपूरचा इतिहास', महाकाली प्रकाशन, चंद्रपूर, १९५६.

१०) मिश्र भगवती प्रसाद, 'भारतीय स्वातंत्र्य संग्राममे चंद्रपूर', रमा प्रकाशन, चंद्रपूर, १९८६.

११) पारखी सीताराम श्रीधर, 'चांदा चंद्रिका', (चांदा जिल्ह्याचे मराठी गॅझेटीयर), १९२२.

Assistant Professor
Lokmanya Mahavidyalaya, Warora
Dist. Chandrapur